गुरु पूर्णिमा निखिलेश्वर पूजन

गुरु पूर्णिमा के दिन घर में मंगलमय वातावरण होना चाहिए। गुरु पूजन सम्पन्न करने के लिए साधक को पहले से ही **'निखिल गुरु यंत्र'**, **'पंचमुखी रुद्राक्ष'** तथा **'निखिल दिव्यत्व माला'** प्राप्त कर लेनी चाहिए। इसके अलावा पूजन की सभी निम्न सामग्रियों को भी एकत्र कर लें –

गंगा जल, धूप, दीप, अक्षत, कुंकुम, पुष्प, फल, नैवेद्य (मिठाई) तथा पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद, शक्कर)।

साधना आरम्भ करने से पूर्व साधक स्वयं ही अपने पूजन कक्ष को साफ करें और स्नान आदि से निवृत्त हो कर स्वच्छ पीले वस्त्र धारण करें, गुरु चादर ओढ़ लें तथा अपने सामने बाजोट पर पीले रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर किसी थाली या ताम्रपात्र में केसर से स्वस्तिक बना लें। साधक का मुंह पूर्व या उत्तर दिशा की ओर हो, अपने सामने धूप, दीप जला लें तथा पूजन की अन्य सामग्रियों को भी थाली में सजा कर अपने पास रख लें।

फिर अपने सामने बाजोट पर एक सुपारी में मौली बांध कर उसे पुष्पों का आसन देकर स्थापित करें। उसे गणपति मानते हुए दोनों हाथ जोड़ कर भगवान गणपति का स्मरण करें और धूप, दीप, कुंकुम आदि समर्पित करते हुए मंगल कामना करें –

ॐ गजाननंभूत गणधिसेवितं,
कपित्थ जम्बू फल चारुभक्षणं।
उमासुतं शोक विनाश कारकं,
नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्॥

भो! गणपते सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि, अक्षतं धूपं दीपं पुष्पं नैवेद्यं च समर्पयामि ॐ गणधिपतये नमः ॥

गणपति पूजन के पश्चात् दाहिने हाथ में जल लेकर विशिष्ट गुरु पूजन का संकल्प करें –

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः आषाढ़ मासे पूर्णिमा तिथो बुधवासरे (दिन व महीना) *अमुक गोत्रीयः* (अपना गोत्र बोलें) *अमुक शर्माऽहं* (नाम बोलें) *सकल भौतिक उन्नति प्राप्ति निमित्तं आध्यात्मिक पक्ष सिद्धि निमित्तं अद्य अस्मिन् विशिष्टे दिवसे गुरु पूर्णिमा शुभ अवसरे पूर्णत्व प्राप्ति निमित्तं मन वचन कर्मणा अश्रुपूरित नेत्राभ्यां गुरु पूजनं सम्पर्ददे।*

संकल्प करने के पश्चात् जल भूमि पर छोड़ दें।

इसके बाद थाली में गुलाब की पंखुड़ियों का आसन प्रदान कर, गुरु आह्वान करें –

पूर्वस्यां पूर्वा एतोस्मानं गुरुं आवाहयामि स्थापयामि नमः।

फिर गुरु प्रार्थना करें –

ॐ आवोदेवा परिमहे वमन्त तद्दरे।
आवोदेवा सवहै यज्ञियासो हवामहे।।

गुरु आह्वान के बाद **निखिल गुरु यंत्र** को उन पंखुड़ियों पर स्थापित करने के बाद गंगा जल अथवा शुद्ध जल से यंत्र को स्नान करायें –

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।

इसके पश्चात् **'निखिल गुरु यंत्र'** को दूध, दही, घी, शहद और शक्कर से स्नान करायें –

दुग्ध स्नानं समर्पयामि नमः – दूध
दधि स्नानं समर्पयामि नमः – दही
घृत स्नानं समर्पयामि नमः – घी
मधु स्नानं समर्पयामि नमः – शहद
शर्करा स्नानं समर्पयामि नमः – शक्कर

इसके बाद पांचों चीजों को एक साथ मिला कर पंचामृत स्नान करायें –

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सोदेशेऽभवत् सरित।।

यंत्र को शुद्ध जल से स्नान करा कर पौंछ लें फिर किसी दूसरी थाली में कुंकुम से स्वास्तिक बना कर बाजोट पर रख दें तथा उसमें गुरु यंत्र को स्थापित करें।

सर्वप्रथम यंत्र को तिलक लगायें –

ॐ नमो रत्नवन्तोय सहस्रमूर्तये, सहस्र पादाक्षिशिरोरूबाहवे। सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्र कोटि युग धारिणे नमः।।

अक्षत समर्पित करें –

ॐ अक्षन्नमी मदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत।
अस्तोषत स्वभावनो विप्रान्
विष्ठयामती योजान् विन्दते हरी।।

फिर यंत्र पर पुष्प या पुष्प माला समर्पित करें –

सुमाल्यानि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!
मया दत्तानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिह्यताम्।।

यंत्र पर पुनः अक्षत चढ़ायें –

ॐ अक्षन्तात् पूर्वा स दीर्घो स
पूर्वोस्मात् एतोस्मानं स कुर्यात्।
अक्षतान् समर्पयामि नमः।।

अब अपने दाहिने हाथ में मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त **'पंचमुखी रुद्राक्ष'** के ऊपर त्रिताप नाश के लिए तीन बार कुंकुम से तिलक करें, फिर उसे दाहिने हाथ की मुट्ठी में बंद करके अपनी आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति एवं गुरु कृपा की प्राप्ति के लिए चिन्तन करते हुए यंत्र पर चढ़ा दें –

त्रितापनाशकं स एतोस्मान्
मांगल्यं फलं समर्पयामि नमः।।

धूपं आघ्रापयामि नमः –धूप दिखाइये।
दीपं दर्शयामि नमः –दीप दिखाइये।

दोनों हाथ जोड़ें –

भो! दीप! सूर्य रूपस्त्वं अन्धकार निवारक!
मम हृदये पूर्णत्वं प्रकाशं भव सर्वदा।।

यज्ञोपवीत समर्पित करें –

यज्ञोपवीत इति सुतलं छन्दः यज्ञोपवीत धारणे

विनियोग –

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापते यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुंच, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नैवेद्य और फल अर्पित करें –

नैवेद्यं निवेदयामि स एतोस्मानम् फलं
समर्पयामि नमः।।

फिर पुष्प समर्पित करें –

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाणि मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
पुष्पाञ्जलि समर्पयामि नमः।।

यंत्र के समक्ष हाथ जोड़, सिर झुका कर पूर्ण श्रद्धा एवं निष्ठा पूर्वक गुरु के मानस स्वरूप को प्रणाम करें। फिर पूज्य गुरुदेव से प्रार्थना करें –

त्वं मातृ रूपं त्वं पितृ रूपं,
ब्रह्म स्वरूपं रूद्र स्वरूपम्।
विष्णु स्वरूपं वेद स्वरूपं
गुरुत्वं शरण्यं गुरुत्वं शरण्यम्।।
न जानामि मंत्रं न जानामि तंत्रं,
न योगं न पूजां न ध्यानं वदामि।
न जानामि चैतन्य ज्ञानं स्वरूपं,
एकोहि रूपं गुरुत्वं शरण्यम्।।
अनाथो दरिद्रो जरा रोग युक्तो,
महाक्षीणकायः सदा जाड्यववत्रः।
विपत्ति प्रविष्ट सदाहं भजामि,
गुरुत्वं शरण्यं, गुरुत्वं शरण्यम्।।
मम अश्रु अर्घ्यं देहं च पात्रं,
ज्ञानं च ज्योतिर्भवतां सदेव।
मम संसदि पूर्ण समर्पयामि,
गुरुत्वं शरण्यं गुरुत्वं शरण्यम्।।

मम पूर्ण शरीरं त्वां देहत्वं एतोस्मानं स पूर्णत्व सिद्ध चे मम अश्रु पूर्ण नेत्राभ्यां त्वां गुरुपूजनंच मम करिष्ये त्वां चरणे पूर्णत्व प्राप्ताय निमित्तं सर्वसुखसौभाग्यं धन धान्य ऐश्वर्य प्रतिष्ठा पूर्ण मनोकामना सिद्धाय स तुभ्यं सम्पर्ददे।

इसके बाद **गुरु सिद्ध दिव्यत्व माला** से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

ॐ निं निखिलेश्वराय गुरुत्वं सिद्धचे निं ॐ।।

मंत्र जप के पश्चात् पूरे परिवार सहित गुरु आरती और समर्पण स्तुति अवश्य सम्पन्न करें। इस प्रकार गुरु पूर्णिमा का यह पूजन विधान सम्पन्न होता है।

गुरुत्व शक्ति के प्रतीक पंचमुखी रुद्राक्ष को पूजन सम्पन्न करने के पश्चात् जलभरे छोटे कलश में रखें तथा उस जल को परिवार के सभी सदस्यों में चरणामृत के रूप में बांट दें। गुरु को समर्पित नैवेद्य को भी पूरे परिवार में बांट दें तथा स्वयं भी ग्रहण करें। गुरु पूजन की यह सामग्री अपने पूजा स्थान में ही स्थापित रखें और महीने में एक बार पूर्ण विधि-विधान सहित गुरु पूजन अवश्य करें। गुरु मंत्र के अतिरिक्त ऊपर वर्णित निखिल मंत्र का भी जप अवश्य करें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 650 /-

अब सौप दिया इस जीवन का
सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में
और हार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप दिया .....

मेरा निश्चय बस एक यही,
इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं।
अर्पण कर दूं दुनियां भर का,
सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप दिया .....

जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं,
ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे सब गुण दोष समर्पित हों,
भगवान तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप दिया .....

यदि मानव का मुझे जनम मिले,
तो तब चरणों का पुजारी बनूं।
इस पूजक की इक-इक रग का,
हो तार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप दिया .....

जब-जब संसार का कैदी बनूं,
निष्काम भाव से कर्म करूं।
फिर अन्त समय में प्राण तजूं,
साकार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप दिया .....

मुझ में तुझ मे बस भेद यही,
मैं नर हूं तुम नारायण हो।
मैं हूं संसार के हाथों में,
संसार तुम्हारे हाथों में।
अब सौंप दिया .....